अंक – 32 । जुलाई – दिसम्बर 2015

भाकृअनुप
ICAR

CIRG
1979
MATHURA

अजामुख

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)

CERTIFICATE TÜV NORD

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:
डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक :
डा. गोपाल दास
डा. अनु राहल
डा. नितिका शर्मा
डा. विजय कुमार
डा. हरिऔध तिवारी

टंकक
जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

http://www.cirg.res.in

निदेशक की कलम से

मैं इस नववर्ष पर सभी संस्थान कर्मियों को बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि नववर्ष आप सबकी आँकाक्षाओं को फलदायी बनाये तथा आपका संस्थान के सर्वांगीण विकास में अपेक्षित योगदान मिले। बकरी पालन के नित नये आयाम हमारे समक्ष उद्धटित हो रहे हैं, बकरी का दूध जो कि औषधीय गुण रखता है तथा इसके माँस की दिन–प्रतिदिन माँग बढ़ती जा रही है। बकरी पालन की उन्नत तकनीकों के उपयोग एवं सफल उद्यमियों द्वारा बकरी पालन के क्षेत्र में सहभागिता करना, बकरी पालन के द्वारा अधिक मांस उत्पादन में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। चारागाहों एवं चारे की उपलब्धता में कमी के कारण बकरी पालन विस्तृत पद्धति से सघन पद्वति की ओर अग्रसर हो रहा है। आने वाले वर्षों में बकरियों को उचित चारे/दाने की आपूर्ति करने के विकल्पों पर अनुसंधान बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। बकरी आधारित आजीविका सुरक्षा को बढ़ावा देने से ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं की सहभागिता बढ़ी है। भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंघान संस्थान द्वारा विगत वर्षो में बकरी पालन से संम्बधित विज्ञान सम्मत ज्ञान को प्रशिक्षण के माध्यम से बढ़ावा दिया गया जिसके फलस्वरूप संस्थान में बकरी पालकों एवं नवउद्यमियों के आगमन में भारी वृद्धि हुई है। संस्थान द्वारा व्यावसायिक बकरी पालन पर प्रतिवर्ष चार से अधिक बार प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है, जिसकी दिन प्रतिदिन माँग भी बढ़ रही है। के.ब.अ.सं. द्वारा विकसित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से बकरी पालक, पशुचिकित्सक एवं प्रसार कार्यकर्ताओं को विशेष लाभ मिल रहा है। इसके फलस्वरूप देश में बकरी पालन को बढ़ावा देने में मदद मिल रही है। संस्थान द्वारा हाल ही में 'मेरा गाँव मेरा गौरव' योजना को वैज्ञानिकों के सहयोग से प्रारम्भ किया है, जिसके अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए हैं। संस्थान द्वारा फार्म इनोवेटर दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पशुधन कमिश्नर डा. सुरेश हन्नापोगल ने भाग लिया। संस्थान में दिनाँक 18 सितम्बर, 2015 को माननीय कृषि राज्य मन्त्री डा. संजीव कुमार बालियान को दौरा हुआ। मन्त्री जी द्वारा संस्थान के क्रिया कलापों को सराहा गया। हम नित नये अनुसंधान के द्वारा भारत के किसानों की समस्याओं को हल करने की दिशा में अग्रसर हैं। सभी को नववर्ष की पुनः शुभकामनाएँ ।

(सतीश कुमार)
कार्यवाहक निदेशक

उत्तर प्रदेश की बकरी संपदा एवं विकास

मनोज कुमार सिंह, सोविक पाल, अनुपम कृष्ण दीक्षित, महेश डिगे, नितिका शर्मा एवं सतेन्द्र कुमार सिंह

आदिकाल से बकरियां मानव विकास की सहचर रही हैं। इसका प्रमुख कारण बकरियों की बहुउद्देशीय उपयोगिता एवं सरल प्रबंधन है। भारतवर्ष में बकरियों की कुल 24 वर्गीकृत नस्लें हैं जिनकी संख्या कुल बकरी संख्या (13.5 करोड़) का लगभग 20 प्रतिशत हैं शेष बकरियों की संख्या अवर्णित वर्ग की है। आंकड़े बताते हैं कि भारतीय बकरियों का औसत मांस, दूध एवं रेशा उत्पादन दर एशिया महाद्वीप एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से बहुत कम है। इसका मुख्य कारण अविचारपूर्ण प्रजनन, विभिन्न नस्लों का अन्त:मिश्रण, चारागाहों का विलुप्त होना, बकरियों को पूरक आहार न देना, टीकाकरण एवं पेट के कीड़े की दवा न देना एवं उचित आवास उपलब्ध न होना है। चूंकि बकरी पालन मुख्यतया अशिक्षित एवं गरीब व्यक्तियों द्वारा संचालित है अत: पशुपालन के लिये अत्यावश्यक तकनीकी/ प्रबंधन का अंगीकरण नहीं हुआ है। लगभग 70 प्रतिशत बकरी पालकों को अत्यावश्यक प्रबंधन आवश्यकताओं की जानकारी ही नहीं है।

उत्तर प्रदेश की बकरी संपदा

राज्य में बकरियों की संख्या लगभग 15 लाख है जो कि भारत की कुल बकरियों की संख्या का लगभग 11 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दो नस्लों का उद्भव हुआ है जिनके नाम जमुनापारी एवं बरबरी हैं। जिनका संक्षिप्त विवरण तालिका में दर्शाया गया है।

बरबरी भारत की महत्वपूर्ण मांस उत्पादक नस्ल है जिसकी प्रदेश के विभिन्न जिलों एवं देश के विभिन्न राज्यों मे व्यावसायिक बकरी पालन के लिए भारी मांग है। जिसका प्रमुख कारण उच्च जनन क्षमता (बहुप्रसवता), कम आयु में परिपक्वता, दो ब्यॉत के बीच कम अन्तराल एवं विभिन्न पोषण पद्धतियों में सुगमतापूर्वक उत्पादन करना है। उपरोक्त कारणों से इस नस्ल की बकरियाँ गॉव के अलावा शहरों एवं कस्बों में भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

जमुनापारी बकरियॉ देश की सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल है। इस नस्ल की बकरीयों को विश्व विख्यात एग्लोन्यूबियन बकरी के विकास में भी उपयोग में लाया गया है। साथ ही श्री लंका, वियतनाम, मलेशिया आदि देशों की बकरी विकास योजनाओं में उपयोग किया गया है।जमुनापारी बकरी को भारत के विभिन्न राज्यों में बकरी के आनुवंशिक विकास योजनाओं में भी सघनता से उपयोग में लिया गया है। वर्तमान में बरबरी एवं जमुनापारी बकरियों की पश्चिमी, उत्तर एवं दक्षिण भारत के अर्द्धशुष्क एवं शुष्क भू-भागों में मांग हो रही है। इन बकरियों की अनुकूलनता एवं उत्पादकता भी उल्लेखनीय रही है। हालांकि उच्च गुणवत्ता वाले नरों को कुर्बानी के लिए बधियाकरण चिन्ता का विषय है, जिसे बकरी पालकों को जागरूक करके रोकना होगा। इसके लिए 10-20 प्रतिशत उत्कृष्ट क्षमता वाले (जुड़वा पैदा हुए, उच्च शारीरिक भार वृद्धि एवं मॉ के नीचे अधिक दूध) नरों का तीन से छ: माह की उम्र में प्रजनक बकरों के रूप में चयन करना होगा।

विगत कुछ वर्षो से जमुनापारी एवं बरबरी बकरियॉ की संख्या एवं उत्पादन क्षमता अपने मूलक्षेत्रों में लगातार घटती जा रही है। आंकड़े बताते हैं कि वर्तमान में जमुनापारी एवं बरबरी बकरियों की संख्या इनके गृहक्षेत्र में लगभग 5,000 एवं 20,000 तक सिमिट गई है जिसका प्रमुख कारण उच्च कोटि के बीजू बकरों का भारी अभाव, बकरी पालकों की अज्ञानता तथा गॉव आधारित गौचरों का विलुप्ती के कगार पर होना है। अधिकांश बकरी पालक अच्छी बढ़वार वाले नर मेमनों को मांस उत्पादन (कुर्बानी) के लिये बधिया कर देते हैं या कसाईयों को बेच देते हैं तथा बचे हुए निम्न गुणवत्ता वाले नरों को प्रजनन के लिए उपयोग में लाते हैं। नस्ल आधारित बकरी प्रजनन नीति का न होना, सहकारिता का अभाव एवं बकरी तथा बकरी के उत्पादों के विणणन का संगठित विपणन न होना आदि अन्य प्रमुख कारण हैं।

उत्तर प्रदेश में बड़ी संख्या में सिरोही, जखराना एवं इनके क्रास, बतीसी, बुन्देलखंडी एवं अवर्गीकृत /मिश्रित लक्षणों वाली बकरियॉ पायी जाती हैं। उपरोक्त बकरियों के आनुवांशिक विकास के लिए कोई भी योजनाबद्ध प्रयास नहीं किया गया है। उपरोक्त कम पहचान वाली बकरियों की नस्लों में चयनित प्रजनन द्वारा (उच्च क्षमता वाले नरों को चिन्हित करके प्रजनन के लिए उपयोग में लाकर) तथा संकर एवं मिश्रित लक्षणों वाली बकरियों का ग्रेडिंग-अप विधि द्वारा आनुवांशिक सुधार किया जा सकता है। चूँकि शुद्ध नस्ल के जमुनपारी एवं बरबरी नर एवं मादाओं की उच्च कीमत पर भारी मांग होने के कारण भारी कमी हो गयी है। अत: इन शुद्ध नस्लों के जानवरों (मादाओं) के क्रास ब्रिडिंग कराने की सिफारीश नहीं की जाती है, न ही ये लम्बी अवधि के लिए फायदेबन्द है।

नस्ल	आवास क्षेत्र	भौतिक स्वरूप	उपयोगिता
बरबरी	एटा, अलीगढ, हाथरस, मथुरा व आगरा	लम्बाई: 60-70 से.मी., ऊंचाई : 60-70 से.मी.आकार: मध्यम, शरीर पर सफेद एवं भूरे धब्बे, छोटे नूकीले और ऊपर की ओर उठे कान तथा मध्यम एवं बड़े आकार के एवं ऊपर की ओर मुड़े हुए सींग इस नस्ल की विशेष पहचान है। नर एवं मादा का शारीरिक भार क्रमश: 35-40 एवं 30-40 कि0ग्रा0 होता है।	दूकाजी नस्ल है। सघन एवं अर्द्धसघन पद्धति में विशेष उपयोगी। औसत दुग्ध उत्पादन 20-25 लीटर प्रति माह। औसत दुग्ध काल 100 दिन। दो ब्यॉत का अन्तराल आठ माह। बहुप्रसव क्षमता 60-75 प्रतिशत। खाद्य मांस प्रतिशत 55 प्रतिशत।
जमुनापारी	इटावा जिले में यमुना व चम्बल नदियों के कछार में स्थित	लम्बाई: 75-85 से.मी., ऊंचाई : 75-85 से.मी.आकार: बड़ा, रंग : सफेद एवं उभरी तोते जैसी नाक जिस पर बालों के गुच्छे एवं पिछले पैरों के पुट्ठे पर बालों के गुच्छे, कान लम्बे करीब 30-36 से.मी., नीचे की ओर लटके होते हैं। उपरोक्त लक्षण इस नस्ल की विशेष पहचान हैं। नर एवं मादा का शारीरिक भार क्रमश: 55 - 65 एवं 40 - 50 कि0ग्रा0 होता है।	औसत दुग्ध उत्पादन 50-60 लीटर प्रति माह। औसत दुग्ध काल 8 माह। दो ब्यॉत का अन्तराल 11 माह। बहुप्रसव क्षमता 30-40 प्रतिशत। प्रथम ब्यॉत का अन्तराल 18-22 माह। खाद्य मांस प्रतिशत 55 प्रतिशत।

संस्थान द्वारा बकरी एवं बकरी पालकों के लिए किये जा रहे प्रयास

संस्थान ने बकरी प्रजनन, पोषण, प्रबंधन (रखरखाव) एवं रोगों की रोकथाम और चिकित्सा के क्षेत्र में कई वैज्ञानिक उन्नत तकनीकें विकसित की हैं। प्रमुख तकनीकों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

- बरबरी तथा जमुनापारी नस्ल की बकरियों में उत्पादन एवं गुणवत्ता में आनुवांशिक सुधार करके उच्चगुणवत्ता वाली बकरियों को बकरी पालाकों को उपलब्ध कराना।
- छोटे एवं व्यावसायिक बकरी पालकों के विकास हेतु उन्नत बकरी पालन की सघन एवं अर्ध-सघन प्रबंधन पद्धतियों आधारित माडल का विकास।
- बकरियों को विभिन्न रोगों से बचाने हेतु वार्षिक स्वास्थ कलेंन्डर का विकास। कलेंन्डर में उल्लिखित क्रियाओं का उचित समय पर प्रयोग कर बकरियों को उनमें होने वाले प्रमुख रोगों से बचा कर अनावश्यक हानि से बचा जा सकता है।
- विभिन्न नस्ल, आयु, अवस्था, दूध एवं मांस उत्पादन आदि के लिए विभिन्न प्रकार के संतुलित आहारों का विकास।
- बकरियों को चारा, दाना एवं पानी देने हेतु उन्नत प्रकार के आधुनिक उपकरणों का विकास।
- बकरी पालन की उन्नत पद्धतियों का कृषकों एवं व्यवसायीयों में प्रशिक्षण द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित करना।

बकरियों का प्रजनन प्रबन्ध

साकेत भूषण

बकरी के आनुवंशिक उन्नयन की शुरूआत बकरी के प्रजनन प्रबन्ध से प्रारम्भ होती है। अत: कहा जा सकता है कि उत्तम प्रजनन सफल बकरी पालन का आधार है। प्रत्येक बकरी नस्ल एक निश्चित शारीरिक भार प्राप्त करने के बाद ही प्रजनन के योग्य होती है। अत: बकरी का गर्भाधान तभी कराना चाहिए जब वह एक निश्चित उम्र तथा शारीरिक भार प्राप्त कर ले। बकरी की उम्र बढ़ने के साथ-साथ क्षमता कम होने लगती है। अत: रेबड़ में 7 वर्ष से ज्यादा उम्र की बकरियों का निष्कासन तथा उनकी प्रजनन क्षमता की जांच करते रहना चाहिए। प्राय: बड़े आकार वाली नस्लों की बकरियॉ 10 वर्ष तक बच्चा देने की क्षमता रखती हैं। लेकिन इस उम्र की बकरियों में मृत्यु दर ज्यादा रहने से नुकसान की भी सम्भावना रहती है। अत: बकरी की उम्र 8-9 वर्ष होते ही उसका रेबड़ से निष्कासन कर देना चाहिए। मांस के लिए प्रसिद्ध बकरी नस्लों में दूध के लिए प्रसिद्ध नस्लों से बहुजनन क्षमता भी काफी अधिक पाई गई हैं। भारतीय नस्ल की बकरियाँ पूरे साल ऋतु में आती रहती हैं। लेकिन इसकी आवृति घटती रहती है। मुख्य रूप से बकरियाँ अप्रैल के आखिरी सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक तथा सितम्बर के आखिरी सप्ताह से अक्टूबर तक ऋतु (गर्मी) में आती है। अत: इन महीनों में प्रजनन के लिए प्रजनन योजना बनाकर उचित नरों का चयन करके उसका उचित बकरी से ही समागम कराना चाहिए ताकि अंत: प्रजनन ना हो सके। इसके लिए प्रजनन में प्रयुक्त होने वाले नर तथा मादा आपस में 3-5 पीढ़ी तक आपस में सम्बन्धी नहीं होना चाहिए जिससे बीमारी सम्बन्धी आनुवंशिकी गुणों के प्रभावी होने की सम्भावना कम रहती है। नर तथा मादा के समागम के बाद यदि बकरी गर्भित नहीं होती है तो वह 17-21 दिन के अंतराल के बाद पुन: गर्मी में आती है। अत: द्वितीय ऋतु में पुन: नर से समागम कराके सफल गर्भाधान कराना चाहिए यदि उसके बाद भी बकरी गर्भित नहीं होती है तो समझ जाना चाहिए कि या तो बकरी में कोई कमी है या फिर गर्भ धारण के लिए

सारिणी : बकरियों की प्रमुख नस्लों के प्रजनन गुण।

बकरी नस्ल	लैंगिक परिपक्वता आयु (दिन)	लैंगिक परिपक्वता वजन (कि.ग्रा.)	प्रजनन ऋतु का समय	मदकाल की अवधि (घंटे)	पुन: मदचक्र की अवधि (दिन)	प्रसवोपरांत पुन: मदकाल की अवधि (दिन)
1. जमुनापारी	555	25	मई-जुलाई व अक्टूबर-नवम्बर	38	19	149
2. बीटल	523	24	मई जुलाई व अक्टूबर-नवम्बर	24	19	170
3. सिरोही	499	27	फरवरी-मई व अक्टूबर-नवम्बर	22	20	180
4. जखराना	421	22	मई-दिसम्बर व अक्टूबर-नवम्बर	29	21	131
5. मारवाड़ी	311	17	मई -दिसम्बर व अक्टूबर-नवम्बर	35	19	171
6. बरबरी	288	16	वर्ष भर, आवृति बदलती रहती है	38	19	56
7. सुरती	548	25	मई -जुलाई व अक्टूबर-नवम्बर	55	20	170
8. मालाबारी	437	18	मई दिसम्बर व अक्टूबर-नवम्बर	52	21	91
9. बंगाल	300	13	मई दिसम्बर व अक्टूबर-नवम्बर	40	19	67
10. पश्मीना	365	15	मई दिसम्बर व अक्टूबर-नवम्बर	24	20	48

ऋतुकाल का सही आंकलन नहीं किया जा रहा है। ऋतु काल का सही आंकलन करने के लिए ऋतुकाल के महीनों में बकरी पालन 50-60 बकरियों के समूह में एक टीजर (कृत्रिम) बकरा रोजाना सुबह शाम आधा-आधा घंटा घुमाते रहना चाहिए और टीजर बकरा जिस बकरी पर चढ़ता है उससे यह पता चल जाता है कि वह बकरी ऋतु में है और उस बकरी का समागम उचित बकरे से कर दिया जाता है। एक प्रजनन चक्र सफल गर्भाधान से प्रारम्भ होकर सामान्य प्रसव के साथ पूर्ण हो जाता है। प्रजनन के लिए अच्छे गुणों वाले नर यानि अधिक दूध तथा मांस उत्पादन वाले गुणों वाले नर तथा मादा पशुओं का चयन सफलतापूर्वक करना बहुत आवश्यक है। इसके लिए प्रजनन में प्रयुक्त होने वाले नर तथा मादा पशुओं के माता पिता के गुण भी देखना चाहिए साथ ही साथ उनके सम्बन्धियों के गुण भी देखे जा सकते हैं। अच्छे गुण वाले माता पिता तथा अच्छे गुण वाले सम्बन्धियों वाले नर तथा मादाओं का आपस में प्रजनन कराने से निश्चित ही अच्छे गुणों वाली संतान प्राप्त होगी। बकरियों की उत्पादन क्षमता बनाये रखने के लिए बकरियों का प्रजनन चक्र निरन्तर चलता रहना चाहिए। इसके लिए बकरियों को पौष्टिक राशन देने के साथ-साथ बकरी के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का समय-समय पर निराकरण करते रहना चाहिए। प्रजनन के लिए ऐसे नर तथा मादाओं का चयन भी करना चाहिए जिसमें दो ब्यांतों में कम अंतराल रहता हो जिससे प्रसवोपरांत बकरियों को जल्दी ऋतुमयी होने से उन्हें पुन: प्रजनित किया जा सके। दो ब्यांतों के बीच अंतराल कम हो जाने से बकरियों की बच्चा देने की क्षमता में वृद्धि हो जाती है। प्रसवोपरांत बकरी के ऋतु चक्र में आने के बाद यदि बकरी प्रथम प्रसव की कमजोरी से उबर कर पूर्ण स्वस्थ है तो उचित नर से समागम कराके प्रजनन करा देना चाहिए जिससे बकरी की बच्चा देने की पूर्ण क्षमता का दोहन हो सके। प्रजनन का समय ऐसा भी रखना जिसमें प्रसव न तो बहुत अधिक सर्दी के समय हो और ना वर्षा ऋतु में हो ताकि मेमना पूर्ण स्वस्थ रहकर उचित विकास कर सके और मेमनों की मृत्यु दर कम से कम रहे। बकरी की प्रमुख नस्लों की लैंगिक परिपक्वता एवं विभिन्न जनन गुणों को तालिका में दर्शाया गया है जिसको बकरी प्रजनन हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है।

बकरी के बच्चों का पालन-पोषण व उनकी देखरेख

हरिऔध तिवारी

बकरी के बच्चों का जन्म से ही अच्छी तरह पालन-पोषण करना अति आवश्यक है क्योंकि ये बच्चे ही बड़े होकर उत्पादन का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। जन्म के समय से ही बकरियों के बच्चे की उचित देख-भाल करने पर उनकी उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। अच्छी देख-भाल न करने की दशा में बकरी के बच्चों में प्रथम सप्ताह की आयु से एक माह की आयु तक मृत्युदर 25 से 50 प्रतिशत तक पहुंच जाती है क्योंकि इस आयु में बच्चों को भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियां लगने की सम्भावना बनी रहती है। बकरी के बच्चों की अच्छी तरह देख-रेख करने से उनकी मृत्युदर कम हो जाती है साथ ही वे स्वस्थ एवं उत्पादनशील बने रहते हैं। अत: बकरी पालक को अपनी बकरियों से अधिक उत्पादन/लाभ प्राप्त करने के लिए इनके बच्चों का प्रबन्ध सजगता-पूर्वक करना चाहिए।

नवजात बच्चों की देखरेख

बकरी के बच्चे को जन्म के पश्चात सबसे पहले साफ एवं सूखे कपड़े से उसके नथुनों को साफ कर देना चाहिए, जिससे वह ठीक से सांस ले सके। इसके साथ ही उसके शरीर पर लगे लिसलिसे पदार्थ को साफ और सूखे कपड़े से पोंछ देना चाहिए ताकि बच्चे के शरीर में फुर्ती आ जाय। बच्चे के नाल को उसके शरीर से जुड़े हुए स्थान से लगभग 3-4 सेमी. नीचे धागे से कसकर बांध देना चाहिए फिर बंधे हुए स्थान को लगभग एक सेमी. नीचे से किसी तेज चाकू या ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए। बकरी के बच्चे को जन्म के 10-20 मिनट के अन्दर उसकी मां का दूध, जिसे खीस कहते हैं, अवश्य पिलाना चाहिए। गुणों के आधार पर खीस साधारण दूध से भिन्न होता है, इसके सेवन से बच्चों की रोग-निरोधक क्षमता बढ़ जाती है क्योंकि इसमें एण्टीबाडीज (प्रतिरक्षक) होती है। बकरी के बच्चे को जन्म के बाद कम से कम 3-4 दिन तक प्रत्येक घण्टे के अन्तराल पर मां का दूध (खीस) देना आवश्यक है। खीस पिलाने से बच्चे का पाचन भी ठीक रहता है। यदि किसी बकरी के नीचे खीस नहीं है तो उसके बच्चे को अन्य बकरी की खीस या फिस मुर्गी के अण्डे को पैराफिन या अन्य किसी चिकनाई वाले तरल पदार्थ में मिलाकर पिलाना चाहिए।

सर्दियों में भेड़- बकरियों की बीमारियाँ और बचाव के उपाय

नितिका शर्मा, गोपाल दास, विनय चतुर्वेदी एवं मनोज कुमार सिंह

सर्दियों में भेड़-बकरियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस मौसम में इनकी खाद्य आवश्यकताएँ बढ़ जाती हैं तथा अधिकतर भेड़ बकरियाँ गर्भित होती हैं अत: ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भेड़ बकरियों का उचित प्रबन्धन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है । अगर सर्दियों में पशुओं का प्रबधंन ठीक से न किया जाऐ तो बहुत सारे रोग इन्हें घेर लेते हैं । सर्दियों में होने वाले रोग तथा उनसे बचाव के उपाय निम्न हैं ।

न्यूमोनिया: न्यूमोनिया रोग सर्दियों में भेड़-बकरियों को होने वाला सबसे महत्वपूर्ण रोग है, जिसका समय से उपचार न होने पर पशु की मृत्यु हो जाती है । मौसम में अचानक बदलाव, बाडे में भीड़, स्थान परिवर्तन, फफूँदी लगा दाना तथा बारिस में भीगने से इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है । रोग के लक्षण हैं तेज बुखार, खाँसी, साँस लेने में परेशनी, आँख नाक से पानी बहना, भूख न लगना इत्यादि।

इस रोग के उपचार के लिए पशु चिकित्सक के निर्देशानुसार एन्टीबायोटिक दवा जैसे पैनीसिलिन, एम्पीसिलिन, टेटरासाइकलिन सेफटीयोफर देना चाहिए। न्यूमोनिया से बचाव के लिऐ जरूरी है कि भेड़-बकरियों को साफ सुथरे हवादार व रोशनी दार बाड़े में रखा जाए । पशुओं को बदलते मौसम में ठंड से बचाया जाए । भेड़-बकरियों और विशेषकर मेमनों को रात को गर्म रखा जाय । भेड़ बकरियों को जिन रोगों में न्यूमोनिया होता है जैसे गलाघोंटू तथा पी0पी0आर रोग से बचाव हेतु भी टीका लगवाना चाहिऐ । बारिश के समय उन्हें बाड़े में ही खिलाऐं पिलाऐं । धूप निकलने पर ही भेड़ बकरियों को चरने के लिए निकालें । रोगी पशु को अन्य पशुओं से अलग कर उसका इलाज करायें । भेड़-बकरियों के मेंमने ज्यादा ठण्ड नहीं झेल पाते हैं अत: इन पर विशेष ध्यान देना चाहिए । उन्हें गर्म रखने के उपाय करें, नहीं तो इनका शारीरिक तापमान गिर जाता है और ये मर जाते हैं । मेमनों को उनकी माँ का दूध अवश्य पिलायें तथा इन्हे उनकी माँ के पास ही रखें ।

मोहा रोग: मोहा रोग के लक्षण हैं मुँह व होटों पर दाने बन जाना, दाने फूट कर उन पर पपड़ी जम जाना, खाने पीने में परेशानी व दर्द होना आदि। इस रोग में जानवर भली प्रकार खा पी न सकने के कारण कमजोर हो कर मर जाते हैं । मोहा रोग से ग्रसित पशु के मुँह पर 20 प्रतिशत लाल दवा या पोटेशियम परमेंगनेट का घोल समय समय पर लगाना चाहिये । एन्टीबायोटिक दवा लगानी चाहिए । रोगी पशु के खान पान पर विशेष ध्यान दें उन्हें नरम आहार दें ।

गर्भावस्था विषाक्तता: यह गर्भित भेड़ एवं बकरियों में होने वाला एक रोग है । जब गर्भावस्था के अंतिम चरण में माँ के शरीर को ज्यादा ऊर्जा चाहिए ऐसी स्थिति में यदि बकरी को पर्याप्त आहार न मिले तो शरीर में ग्लूकोज की कमी हो जाती है जिससे शरीर में कीटोन अधिक मात्रा में बनने लगते हैं । सर्दियों में भेड़-बकरियाँ ठीक से चर नहीं पाती, चारगाहों में भी अच्छा चारा उपलब्ध नहीं होता अत: इस स्थिति में इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है। इस रोग के लक्षण हैं- उदासीनता, शरीर का तापमान कम होना, पेट के बल लेटना, कभी-कभी दिमागी लक्षण जैसे लक्ष्यहीन चलना, सिर व गले का पीठ की तरफ मुड़ना, अंधापन, मूर्च्छा आदि भी देखने को मिलते हैं। इस रोग से बचाव के लिए भेड़ व बकरियों को संतुलित दाना- चारा उपलब्ध कराना चाहिए, दो या दो से अधिक बच्चे देने वाली भेड़-बकरी को अधिक दाना और पौष्टिक चारा देना चाहिये । रोग की संभावना की स्थिति में गुड़ खिलाना चाहिये, ग्याभिन

भेड़-बकरियों को ठण्ड से बचाने के लिये उचित उपाय कराना चाहिए। ग्याभिन भेड़ व बकरियों का परिवहन न करें तथा परिवहन के समय उनके खान पान पर विशेष ध्यान दें ।

पथरी: पथरी या यूरोलिथिएसिस मेंढो व बकरों में होने वाला एक रोग है। इस रोग के लक्षण हैं पेशाब करने में परेशानी, पेशाव कम आना, पेशाब में खून आना, मुँह से पेशाव जैसी बदवू आना आदि । इस रोग से बचाव के लिए आवश्यक है कि सर्दियों में पशुओं को समुचित मात्रा में पेय जल उपलब्ध कराएँ तथा आहार में कैल्शियम व फासफोरस को 2:1 अनुपात में दें। मेढों व बकरों को आवश्यकता से अधिक अनाज न खिलाएँ तथा आहार में नमक मिलाऐं और पथरी होने पर आहार में अमोनियम क्लोराइड 0.5- 1.0 प्रतिशत तक मिलायें।

बाह्य परजीवी: सर्दियों में किलनी, जूँ व पिस्सू जैसे परजीवियों की संख्या और संक्रमण में वृद्धि हो जाती है। ये परजीवी पशु का खून चूसते हैं जिससे भेड़ों और बकरियों में खून की कमी हो जाती है । इन परजीवियों से बचाव के लिए परजीवी नाशक दवाओं जैसे साइपरमेथरिन, डेल्टामेथरीन से भेड़ बकरियों को नहलाना चहिये। नहलाने के लिए जरूरी है कि 2-3 मि0 ली0 परजीवी नाशक दवा का पानी में घोल बना लें । अधिक सर्दी के समय भेड़-बकरियों को नहलाना नहीं चाहिए क्योंकि इससे निमोनिया होने का डर रहता है। ऐसी स्थिति में बकरी व भेड़ पालक आइवरमेक्टिन नामक दवा का प्रयोग कर सकते हैं। आइवरमेक्टिन दवा का इन्जेक्शन 1 मि0ली0 प्रति 50 किलो शारीरिक भार के अनुसार खाल के नीचे लगाना चाहिये। यदि किसान भाई खाल के नीचे इन्जेक्शन न लगाना जानते हों तो वह डोरामेक्टिन दवा का भी प्रयोग कर सकते हैं । इसका इन्जेक्शन मॉस पेशियों में लगा सकते हैं, लेकिन यह दवा आइवरमेक्टिन की अपेक्षा महँगी है ।

अन्त: परजीवी: सर्दियों में परजीवियों की संख्या भी बढ़ जाती है। यह परजीवी या कृमि मुख्यत: पेट व ऑतों में रहते हैं जो पशु का खून पीते हैं जिससे पशु में खून की कमी हो जाती है, पशु खाना-पीना छोड़ देता है, भूख भी कम लगती है । जानवरों को दस्त भी हो जाते हैं तथा जबड़ों के नीचे सूजन भी आ जाती है । इसमें उचित खान पान के बावजूद भेड़-बकरियाँ कमजोर हो जाती हैं और कभी-कभी मर भी जाती हैं । जानवरों को अन्त: परजीवियों से बचाव हेतु कृमिनाशक दवायें जैसे फेनबेन्डाजोल, एल्वेन्डाजोल, क्लोसेटल, ट्रीक्लाबेन्डाजोल का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह से करें । इन परजीवियों से बचाव के लिए बाड़ों की मिट्टी को समय समय पर बदलना चाहिये । बाड़ों में नमी व आर्द्रता बनने न दें तथा बाड़ों से प्रति दिन कम से कम दो बार मेंगनी हटवायें । एक ही चारागाह का प्रयोग लम्बे समय तक भेड़ व बकरियों को चराने के लिए न करें । बाड़ों को धूप लगने दें तथा धूप से सूखा लें । तालाब व रूके हुये पानी के आसपास जहाँ घोंघों का प्रकोप वहाँ पशुओं को चरने न दें । घोंघों के प्रकोप को कम करने के लिए बत्तक पालें । घोंघों को मारने के लिए नीलाथोथा (कॉपर सल्फेट) का प्रयोग करें । परंतु नीलाथोथा जहरीला होता है अत: इसका प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह से सावधानी पूर्वक करें । पीने के लिए पशुओं को साफ पानी उपलब्ध करायें । बाड़ों में सफाई रखें तथा समय समय पर बिना बुझे चूने का छिड़काव करें ।

कन्टेजियस लिम्फएडिनाइटिस (सी0एल0ए0): सर्दियों में भेड़ बकरियों में फोड़े हो जाते हैं और पस पड़ जाता है । इस स्थिति में फोड़े पकने पर पस निकाल कर घाव को लाल दवा के घोल से धोकर पोवीडोन आयोडीन जैसे मल्हम लगायें और एन्टीबायोटिक दवा दें । पस व मवाद को बाड़े से दूर मिट्टी में दवा दें उसे अन्य पशुओं के सम्पर्क में न आने दें नहीं तो संक्रमण फैलने का डर रहता है । यदि घाव में कीड़े पड़ जाएँ तो तारपीन का तेल लगाकर कुछ समय छोड़ दें तथा जब लारवा ऊपर आए तो चिमटी से निकाल दें तत्पश्चात एन्टीसेप्टिक मलहम लगायें। जिन पशुओं में 3-4 से अधिक फोड़े हो उन्हें कन्टेजियस लिम्फएडिनाइटिस (सी0एल0ए0) नामक बीमारी हो सकती है अत: उन्हें पशु समूह से निकाल दें क्योकि यह संक्रमण फैला सकते हैं ।

अन्य रोग: सर्दियों में कभी कभी संतुलित आहार न मिलने के कारण आवश्यक लवणों की कमी हो जाती है जिससे गर्भपात की समस्या देखी जाती है। ऐसी स्थिति में तो भेड़-बकरियों के आहार में मिनरल मिक्चर अवश्य मिलाएँ और जानवरों को समुचित पौष्टिक व संतुलित आहार दें । यदि संक्रमण के कारण गर्भपात हो तो अन्य पशुओं के बचाव के लिए रोगी भेड़ बकरयों को अलग कर उसका इलाज करवाएँ । संक्रमणित जेर व मरे बच्चे इत्यादि को बाड़ों से दूर मिट्टी में दवा दें ।

इस प्रकार भेड़-बकरियों को आप सर्दियों में होने वाली बीमारियों से बचा सकते हैं तथा बकरी व भेड़ पालन से समुचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।

कीटनाशकों की विषाक्तता एवं प्राथमिक उपचार

अनु राहल

कीटनाशक रासायनिक, भौतिक एवं जैविक पदार्थ होते हैं जो अवांछनीय पेड़-पौधों तथा फसलों को नष्ट करने वाले जीवों/कृमियों को मारने के लिए कृषकों द्वारा प्रयोग में लाये जाते हैं। इन पदार्थों में कीटनाशक, कृमि नाशक, खरपतवारनाशी, कवक नाशी तथा चूहा मारक दवा प्रमुख हैं। इन कृषि रसायनों का भण्डारण अत्यन्त सावधानी से करना चाहिये । ये रासायनिक पदार्थ पशुओं के शरीर में मुख, श्वास तथा त्वचा द्वारा अवशोषित होकर पहुँचते हैं। बकरियों में विषाक्तता के प्रमुख कारण दुर्घटनावश कीटनाशक का छिड़काव युक्त संक्रमित चारा खाना, कीटनाशकों के खाली डिब्बे को सही ढंग से साफ न करना तथा इन पात्रों में बकरियों को चारा तथा पानी देना, कीटनाशकों तथा चारे का एक साथ भण्डारन करना, दूषित जल भोजन एवं धुएं के सम्पर्क में आना, बाह्य परजीविओं को मारने वाली दवाओं को पशुओं द्वारा चाटना है।

विभिन्न श्रेणियों के कीटनाशकों की विषाक्तता के लक्षण:

आर्गेनोफास्फेट व कार्बोमेट कम्पाउण्ड की विषाक्तता के लक्षण हैं- बकरी का अत्यधिक उर्त्तेजित/बैचेन होना, दाँतों का किटकिटाना, पीछे की तरफ चलना, दीवार पर चढना, छलांग लगाना, शरीर का तापमान बढना, झाग दार लार बहना, अतिसार होना, आँखों की पलकों का फॅड़कना, पुतिलियों का फैलना तथा बार-बार मूत्र विसर्जन करना इत्यादि मुख्य है।

आर्गेनोक्लोरीन व पायरेथोएड कीटनाशक की विषाक्तता पशुओं में समान्यत: कीटनाशक छिड़काव युक्त फसलों के संम्पर्क में आने से होती है क्योंकि ये कीटनाशक पशुओं की त्वचा द्वारा अवशोषित हो जाते हैं। इस विष के दुष्प्रभाव के कारण पीड़ित पशु में अत्यधिक लार बहना, पसीना आना, अश्रु निकलना, बार बार मूत्र विसर्जन, अतिसार, पेट में दर्द होना, रक्तचाप एवं शरीर का तापमान घटना, नेत्र पुतलियों का संकुचित होना, अत्यधिक बैचेन होना, श्वास लेने में कठिनाई होना, हृदय स्पंन्द का कम होना तथा अन्त में पशु का मृत होना पाया जाता है।

खरपतवारनाशक कम्पाउड की विषाक्ता से पीड़ित पशु के शरीर का तापमान बढना, भूख न लगना, रूमन का स्थिर होना, मुँह में छाले पड़ना, अतिसार होना, पेट फूॅलना तथा श्वास लेने मे तकलीफ होना इत्यादि है।

चूहामारक दवा की विषाक्ता सामान्यत: पशुओं में चुहे की बिट खाने से होती है। इसकी विषाक्तता के लक्षण उल्टी आना, हृदय की धड़कन बढना, मसूँडो तथा शरीर के सभी छिद्रों से रक्त निकलना, शरीर के अन्दर हिमोरेज, त्वचा के नीचे अन्दर रक्त एकत्रित होना, श्वास लेने मे तकलीफ होना तथा पीड़ित पशु का मृत होना हैं ।

बचाव तथा उपचार :-

पीड़ित पशु को विष संक्रमित चारा पानी व स्थान से हटाकर शान्त, स्वच्छ, खुले एवं हवादार स्थान पर रखना चाहिए । यदि उसके शरीर के तापमान ज्यादा हो तो कम करने के लिए ठंडे पानी सें नहलाना चाहिए । पीड़ित पशु के श्वास क्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए कृत्रिम ऑक्सीजन देना चाहिए । पीड़ित पशु को जितना जल्दी हो सके चिकित्सक के पास ले जायें ।

उर्त्तेजित/बैचेन पशु को एट्रोपिन सल्फेट 0.2 सें 2.0 मिलिग्राम प्रति किलोग्राम दर से बकरी को देना चाहिए। अत्यधिक उत्तेजित पशु को शान्त करने के लिये पेन्टोबार्बीटोन सोडियम अथवा डाईजीपाम भी दे सकते है। एक्टीवेटिड चारकोल (दो किलो ग्राम पहले दिन इसके पश्चात 1 किलोग्राम रोजाना दो हफ्तों तक) का घोल बनाकर पिलायें।

पुरस्कार एवं सम्मान

- आई.सी.ए.आर.-के.ब.अ.सं. ने कृषि ग्राम विकास प्रदर्शनी, दीनदयाल धाम, फरह में दिनांक 9-11 अक्टूबर, 2015 को बकरी उत्पादन तकनीकियों का प्रदर्शन किया तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया ।

ऊन की उचित मात्रा एवं मूल्य कैसे प्राप्त करें

गोपाल दास

भेडों से अधिक ऊन व अधिक मूल्य प्राप्त करने हेतु आवश्यक है कि भेड़ पालक ऊन तकनीकी से संबधित जानकारी का प्रयोग करें। भेड़ों से अधिक मात्रा में ऊन एवं उससे अधिक मूल्य प्राप्त करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये:

1.भेड़ों का रख रखाव: सर्वप्रथम आवश्यक है कि भेड़ पालक अपनी भेड़ों को उचित आवास प्रदान करें । भेड़ों का बाड़ा साफ सुथरा रखना चाहिये एवं समय समय पर बाड़े की मिट्‌टी को कीटाणु मुक्त करने के लिए उचित मात्रा में बेबुझा चूना डालना चाहिए । रेवड़ में भेड़ों की उन्न्त नस्ल रखें तथा एक रेवड़ में एक ही नस्ल के जानवर रखें। बीमार एवं नकारा जानवर रेवड़ से उचित समय से निकाल दें । रेवड़ में स्वस्थ्य एवं शुद्व नस्ल का ही मेंढ़ा रखें। भेड़ों को अच्छे चारागाह क्षेत्र में चरायें और जहॉ तक संभव हो इन्हें कांटे रहित जगह पर चरायें क्योंकि ऊन में कांटे लगने से उसका कम बाजार मूल्य मिलता है।

2. भेडों की ऊन कतराई: भेड़ों की ऊन कतराई से 1–2 दिन पूर्व जानवरों को स्वच्छ पानी से नहलाना चाहिये ताकि ऊन के अन्दर की गंदगी, मिट्‌टी, गोबर, घास पत्ती आदि बाहर निकल जायें । नहलाने से ऊन जितनी अधिक साफ होगी उतनी ही ऊन कतराई के समय कैंची आसानी से चलेगी तथा जानवर के शरीर पर खाल में कम कट लगेंगे। इसके अतिरिक्त नहलाने से ऊन के छट में कमी आ जाती है और उतारा (yield) भी अधिक आता है। कैंची पर धार तीखी होनी चाहिए और कतराई करते समय जरूर ध्यान रखना चाहिये कि ऊन कतराई एक जगह पर एक बार हो यानि एक जगह पर कैंची दोबारा न जाये क्योंकि दुबारा कतराई करने पर ऊन के रेशों की लम्बाई कम हो जाती है जिससे बाजार में इसकी कम कीमत मिलती है । ऊन कतराई के समय यह भी आवश्यक है कि वयस्क व बच्चों की ऊन अलग अलग रखें।

भेड़ पालक को आवश्यक रूप से इस बात का भी जरूर ध्यान रखना चाहिये कि जहॉ ऊन कतराई करें वहॉ का फर्श पक्का, साफ–सुथरा व मिट्‌टी–पानी रहित हो। यदि फर्श पक्का नहीं है तो ऊन कतराई के स्थान को गोबर से लीपकर इस कार्य के लिये प्रयोग कर सकते हैं लेकिन यह स्थान साफ–सुथरा व मिट्‌टी–पानी रहित हो क्योंकि ऊन में मिट्‌टी आदि मिल जाने से ऊन खुरदरी हो जाती है और उसका बाजार मूल्य घट जाता है।

3. ऊन का प्रारम्भिक वर्गीकरण: ऊन कतराई के पश्चात यह आवश्यक है कि ऊन से कांटे निकाल कर अलग कर दें । यदि ऊन में काटों की संख्या ज्यादा हो तो कांटे वाली ऊन को अलग बोरे में भरकर बेचने के लिए रखें। चूँकि भेड़ के सम्पूर्ण शरीर पर ऊन की लम्बाई व रंग में भिन्नता पाई जाती है अत: भेड़ की टांग, पूँछ, चेहरा, पेट आदि की छोटे रेशे वाली तथा रंगीन ऊन को अलग बोरों में भरकर रखना चाहिए। इसी प्रकार यदि रेवड़ में एक से अधिक नस्लों की भेड़ें हैं तो उनकी ऊन भी नस्ल के अनुसार अलग अलग बोरों में भरें। बाजार में प्रारम्भिक वर्गीकरण की हुई ऊन का मूल्य बिना वर्गीकृत की गई ऊन की तुलना में अधिक मिलता है।

4. ऊन का भण्डारण: प्रारम्भिक वर्गीकरण करने के पश्चात ऊन को बेचने के लिए मण्डी में ले जाने से पहले ऊन को सूर्य की गर्मी में ठीक से सुखाकर साफ सुथरी जगह पर भण्डारण करना चाहिये। भण्डारण से पूर्व कमरे के फर्श पर डीडीटी या बीएचसी पाउडर के घोल का छिड़काव कर देना चाहिए जिससे कमरे का फर्श कीटाणु रहित हो जाये और ऊन में कीड़े आदि नहीं लगें।

यदि भेड़ पालक भेड़ों के रख रखाव, ऊन कतराई, ऊन वर्गीकरण व ऊन भण्डारण से संबंधित उपरोक्त वर्णित जानकारी को अपनायें तो निश्चित रूप से वह अपनी भेड़ों से अधिक मात्रा में ऊन एवं उसका अधिक बाजार मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

- दिनांक 18-27 अगस्त, 2015 (10 दिन) 63 वाँ राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 11 प्रांतों के 72 सहभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।
- दिनांक 27 अक्टूबर – 5 नवंबर, 2015 (10 दिवसीय) 64वाँ राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें 9 प्रांतों के 44 सहभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रदर्शनी, किसान मेला एवं तकनीकी प्रदर्शन में सहभागिता

- कृषि प्रदर्शनी मोतीहारी, बिहार में दिनांक 20-21 अगस्त, 2015 को सहभागिता की।
- अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना आन गोट इम्प्रूवमेन्ट की वार्षिक मूल्यांकन समिति के अवसर पर आहूत बैठक 7-8 सितम्बर, 2015 के दौरान बकरी उत्पादन तकनीकियों का प्रदर्शन किया।

- फार्म अन्वेषक दिवस के अवसर पर बकरी उत्पादन तकनीकियों को दिनांक 10 सितम्बर, 2015 केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम में प्रदर्शन किया।
- डा. संजीव कुमार बालियान, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण, भारत सरकार के सितम्बर, 2015 को संस्थान दौरा के दौरान बकरी उत्पादन तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया।

- कृषि ग्राम विकास प्रदर्शनी, दीनदयाल धाम, फरह में दिनांक 9-11 अक्टूबर, 2015 को सहभागिता की।

हिन्दी पखवाड़ा

विगत वर्षों की भांति दिनांक 14-28 सितंबर, 2015 की अवधि में संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 14.9.2015 को एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व आमंत्रित अतिथियों द्वारा 'राष्ट्र विकास में हिन्दी का महत्व एवं संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग व बढ़ते कदम एवं सुधार हेतु सुझाव' पर अपने विचार प्रकट किये गये तथा अन्त में संस्थान के निदेशक द्वारा अपने उद्बोधन में हिन्दी को अपने देश की एकता को जोड़ने वाली एक कड़ी तथा पहचान बताते हुए संस्थान के सभी कर्मियों को शत-प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने हेतु आह्वान किया गया। पखवाड़े के अन्तर्गत हिन्दी श्रुतलेख, हिन्दी हस्ताक्षर, हिन्दी निबन्ध, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी अनुप्रयोग जैसी अनेकों प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की। दिनांक 13.10.2015 को हिन्दी पखवाड़ा समापान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता निभायी एवं दिनांक 14 सितम्बर, 2015 से प्रारम्भ हुए इस हिन्दी पखवाड़े के दौरान समस्त सफल प्रतिभागियों को संस्थान के कार्यवाहक निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डा. सतीश कुमार द्वारा पुरस्कृत किया गया।

सभा / आयोजन

• भा.कृ.अ.प.–के.ब.अ.सं. एवं कामधेनु विश्वविद्यालय, गुजरात के मध्य समझौता ज्ञापन

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान और कामधेनु विश्वविद्यालय, गुजरात के बीच समझौता ज्ञापन पर दिनांक 3 अगस्त, 2015 को हस्ताक्षर हुए। इस अवसर पर के.ब.अ.सं., मखदूम के निदेशक, प्रभारी, मूल्यांकन एवं अनुश्रवण और प्रभारी, अकादमिक उपस्थित रहे।

• स्वतंत्रता दिवस

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने पूरे समपर्ण के साथ 15 अगस्त, 2015 को 69 वॉं स्वतंत्रता दिवस मनाया । इस अवसर पर निदेशक महोदय ने समस्त वैज्ञानिकों का बकरी पालकों के उत्थान में सहयोग की सराहना की।

• शोध सलाहकार समिति की बैठक

शोध सलाहकार समिति की 21वीं बैठक 20 अगस्त, 2015 को सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता डा. ए. के. मिश्र, कुलपति, माफसु, नागपुर ने की। बैठक में प्राध्यापक एस. ए. अशोकन, निदेशक तनुवास, डा. डी.वी. रांगनेकर, पूर्व प्रोग्राम संचालक, बैफ, अहमदाबाद, डा. बी.एस. प्रकाश, उपमहानिदेशक, डा. एम.एन. फाईरोज, कवाफसु, हेबल, बंगलुरू, डा. आर. के. तनवर, पूर्व निदेशक, बीकानेर और डा. एस. के. अग्रवाल मौजूद थे।

• फार्म अन्वेषक दिवस का आयोजन

संस्थान में 10 सितम्बर, 2015 को फार्म अन्वेषक दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत आई.सी.ए.आर. गीत एवं माँ सरस्वती की मूर्ति पर गणमान्य अतिथियों द्वारा माल्यापर्ण व दीप प्रज्जवलन के पश्चात हुई। समारोह के मुख्य अतिथि, डा. अरविन्द कुमार, कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी थे। डा. सुरेश एस. होन्नप्पागोल, आयुक्त पशुधन, भारत सरकार, डा. ए.सी. वार्ष्णेय, कुलपति, दुवासु, मथुरा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डा. एस. के. अग्रवाल, निदेशक, के.ब.अ.सं., मखदूम ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की व कार्यक्रम का संचालन डा. अशोक कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, पशु स्वास्थ्य विभाग द्वारा किया गया।

• अखिल भारतीय बकरी उन्नयन परियोजना की वार्षिक बैठक

संस्थान में दिनांक 7–8 सितम्बर, 2015 को इस परियोजना की वार्षिक बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक का उद्घाटन डा. कृष्ण मुरारी लाल पाठक, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान), भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. एस. के. अग्रवाल द्वारा उपमहानिदेशक महोदय का स्वागत किया गया। इस बैठक में डा. आर. एस. गाँधी, सहायक महानिदेशक, भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली, डा. आर्जव शर्मा, निदेशक, एन.बी.ए.जी.आर., करनाल एवं डा. एस.एम.के. नकवी, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर ने भाग लिया। तकनीकी सत्र प्रथम की अध्यक्षता डा. के.एम.एल. पाठक द्वारा की गई। विभिन्न सत्रों में ए.आई.सी.आर.पी. की 18 इकाईयों की शोध प्रगति का आंकलन किया गया।

विशिष्ट अतिथि

माननीय डा. संजीव कुमार बालियान

18 सितम्बर, 2015 को डा. संजीव कुमार बालियान, माननीय राज्य कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने संस्थान का दौरा किया। उनके साथ डा. के.एम.एल. पाठक, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), डा. ए.के. सिक्का, उप महानिदेशक (एनआरएम), डा. बी.एस. प्रकाश, सहायक महानिदेशक (ए. एण्ड पी.), डा. बी.वी. सिंह, सहायक निदेशक (ओ.पी.) एवं डा. एस. के. दुबे, प्रभारी, आईआई एस डब्ल्यू सी, छलेसर, आगरा, डा. ए.सी. वार्ष्णेय, कुलपति, दुवासु, मथुरा, डा. धीरज कुमार, निदेशक, सरसों अनुसंधान संस्थान निदेशालय, भरतपुर, डा. डी.के. शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय मृदा संरक्षण अनुसंधान, करनाल भी पधारे।

डा. एस. के. अग्रवाल, निदेशक, सी.आई.आर.जी., मखदूम ने सभी गणमान्य अतिथियों के समक्ष संस्थान की उपलब्धियों, अनुसंधान उपयोग, शिक्षण, प्रशिक्षण, संस्थान के प्रौद्योगिकयों के हस्तातरण एवं बकरी और मुजफ्फनगरी भेड़ प्रक्षेत्रों, प्रयोगशालाओं एवं कृषि फार्म का भ्रमण किया और उनके रखरखाव और प्रगति की सराहना की।

माननीय राज्य मंत्री जी ने अन्य अतिथियों के साथ ग्राम नगला चन्द्रभान का भी दौरा किया और कृषि एवं पशुपालन में अपनी समस्याओं के लिए क्षेत्र के किसानों के साथ बातचीत भी की। उन्होंने खारे पानी की समस्या का समाधान खोजने पर बल दिया। उन्होंने ग्रामीण युवाओं के लिए आय और रोजगार सृजन को बढ़ाने के लिए पशुपालन के सुधार के लिए योजनाएं बनाने पर भी बल दिया।

माननीय श्री गिरिराज सिंह

श्री गिरिराज सिंह, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम राज्य मंत्री जी ने 4 नवम्बर, 2015 को चारा उद्योग के प्रतिनिधित्व मण्डल के साथ संस्थान का दौरा किया। साथ ही उन्होंने संस्थान के पशुपालन क्षेत्रों का भ्रमण किया तथा वैज्ञानिकों से बातचीत भी की। डा. यू.बी. चौधरी, विभागाध्यक्ष, पोषण चारा संसाधन एवं उत्पाद प्रौद्योगिकी ने सैंजन की पत्तियों की पोषण क्षमता पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। माननीय मंत्रीजी ने सैंजन के चारे के महत्व की सराहना की और इस बात पर जोर दिया कि कैसे किसान सैंजन द्वारा पारम्परिक फीड की लागत कम कर सकते हैं। और चारे की आपूर्ति कर सकते हैं। चारा उद्योग प्रतिनिधि मण्डल ने भी सैंजन आधारित फीड के लिए सैंजन बायोमास उत्पादन और वैल्यू ऐडेड पर भी अपनी रूचि दिखाई।

केनिया, लाइबिरिया और मालावी के प्रतिनिधि मण्डल का भ्रमण

40 सदस्यों का केनिया, लाईबिरिया और मालावी के प्रतिनिधि मण्डल ने 12 अगस्त, 2015 को संस्थान का भ्रमण किया और शोध कार्यों की जानकारी ली।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत
दूरभाष न.: 0565–2763380, फैक्स न.: 0565–2763246
ई–मेल: director@cirg.res.in,
बेबसाइट: http:// cirg.res.in
हेल्पलाइन न.: 0565–2763320

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई–मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित